चौथा अध्याय : एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : इतिहास और वर्तमान

चौथा अध्याय : एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : इतिहास और वर्तमान

एलजीबीटीक्यूजन के संदर्भ के दृष्टिकोण से इतिहास, पुराण एवं अन्य प्राचीन भारतीय ग्रंथ :

समलैंगिकता एक चर्चित विषय के रूप में उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में यूरोप में आया। तत्कालीन दौर में समलैंगिक संबंध व प्रेम को 'अप्राकृतिक' समझा जाता था क्योंकि इसमें प्रजनन शामिल नहीं था। यौनिक संबंध को तब पारिवारिक वंश के प्रसार एवं प्रजनन के रूप में देखा जाता था। लेकिन उससे पहले समलैंगिक संबंध समाज में मौजूद न हो ऐसा नहीं था। भारतीय पौराणिक व प्राचीन कथाओं में ऐसी कई कथाएं मौजूद हैं जो समलैंगिक संबंधों की मौजूदगी को उजागर करते हैं। जहां भगवान तथा लोग भी तमाम उद्देश्यों से जैसे किसी व्यक्ति के संतुष्टि हेतु, अहंकार के संतुष्टि हेतु तो कभी राजनीतिक कारणों हेतु यौनिक परिवर्तन तथा समलैंगिक संबंध स्थापित करते थे। इन उदाहरणों को देखकर एक बात तो स्पष्ट है कि यौनिक परिवर्तन या यौनिक क्रिया वर्जित नहीं था। भारत सहित पूर्व की कई संस्कृतियाँ इस संबंध को लेकर सहज थी।

महाभारत में जब श्वेतकेतु की माँ को एक ब्राह्मण यौन-संसर्ग के लिए अपने साथ उसका हाथ पकड़कर ले जाता है, तो इसपर श्वेतकेतु क्रोधित हो उठता है। उसके क्रोध को देखकर उसके पिता कहते है कि गाय-मवेशियों की ही तरह स्त्रियां भी किसी पुरुष से यौन-सम्बन्ध बनाने के लिए स्वतंत्र हैं। इसलिए क्रोधित होने की कोई बात नहीं है। नाव पर बैठे ऋषि पराशर नाव चला रही मत्स्यगंधा सत्यवती पर मुग्ध हो उठे और उनसे संगम की इच्छा व्यक्त की। तब सत्यवती ने थोड़ी आपत्ति की क्योंकि बीच नदी में दिन

के उजाले में कोई देखेगा। इसलिए पराशर ने पौधों के झुरमुट से नौका को छिपा दिया। इस तरह उन दोनों का मिलन हुआ जिसमें किसी तरह की कोई बाधा नहीं आयी। और इस संगम से कृष्णद्वैपायन व्यास का जन्म हुआ। अतः उस समय के आचार-व्यवहार के अनुसार यौनाचार मुक्त था, उसपर कोई बंदिश नहीं थी।

प्राचीन ग्रीस में एक लड़के के लिए एक पुरुष के प्रेम को संस्थागत रूप दिया गया था। अरब संस्कृति एक स्त्री के साथ यौनिक संबंध तथा एक लड़के के साथ यौन संबंधों में कोई अंतर नहीं करती है। अरब मध्ययुगीन यात्रियों का दावा है कि 'महिलाएं घर और चूल्हे के लिए थीं, जबकि लड़के आनंद के लिए थे'। ये संस्कृतियाँ समलैंगिक संभोग का कोई पर्यायवाची नहीं देती हैं। यह भिन्न प्रथा भी नहीं थी जिसके लिए अलग पहचान की आवश्यकता हो [1]।

देवदत्त पटनायक अपनी पुस्तक 'I am Divine so are you' में समलैंगिकता की मौजूदगी का उल्लेख कार्मिक आस्था के अनुसार करते है - "समलैंगिक प्रारूप को कम (नीच) के रूप में देखा गया था फिर भी क्योंकि यह जीवन नहीं उत्पन्न करता था और केवल आनंद के एक वस्तु के रूप में अस्तित्व में था, जिन्हें नॉन- क्वियरों को लुभाना होता था और उससे भी बदतर जिन्हें एक बारहमासी आनंद लेने वाला प्राणी के रूप में देखा गया। चूंकि प्रजनन क्षमता में अक्षम थे इसलिए उन्हें कर्म से विक्षिप्त पाया गया जिससे उन्हें केवल एक आनंद की वस्तु के रूप में देखा गया"[2]।

लगभग छठी शताब्दी के आस-पास दक्षिण तथा मध्य भारत में प्रसिद्ध हिन्दू मंदिरों का निर्माण हुआ। मध्य भारत में बने खजूराहों, पूर्व में पूरी, दक्षिण में तंजुवर जैसे मंदिरों पर बनी नक्काशी तथा चित्रों में पुरुष-पुरुष और महिलाओं के बीच स्थापित संभोग को देखा जा सकता है। इन चित्रों को देखकर यह निष्कर्ष निकलता है कि तत्कालीन समाज समलैंगिकता को अप्राकृतिक नहीं मानता था। अतः प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत में समलैंगिक संबंध दिखायी देते है किन्तु किसी अलग श्रेणी में विभाजित नहीं दिखते। भारत में समलैंगिक पहचान व व्यवहार का एक प्राचीन इतिहास रहा है।

महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण (लगभग 7323 ईसा पूर्व) में श्रीराम जब वनवास के लिए प्रस्थान कर रहे थे तो उन्हें सीमा तक छोड़ने के लिए पूरी प्रजा गई थी। सीमा पर पहुंचकर राम ने अयोध्या वासियों से कहा की 'अब सभी स्त्री-पुरुष अपने-अपने घर जाओ'। अयोध्या वासियों में कुछ किन्नर भी थे। चूंकि वे स्त्री या पुरुष नहीं थे इसलिए वे नहीं लौटे। अतः वे वही रुक गए और चौदह वर्षों तक राम का राह देखते रहें। चौदह वर्षों के बाद जब राम लौटे तो उन्होंने उन्हें (किन्नरों को) उसी सीमा पर देखा। उनकी राह देख रहे किन्नरों को उन्होंने आशीर्वाद दिया की कलयुग में तुम लोगों का राज होगा। तुम लोगों द्वारा दिया जाने वाला आशीर्वाद और श्राप दोनों सच होंगे। और इस तरह माना जाने लगा की किन्नरों द्वारा दिया जाने वाला श्राप और आशीर्वाद दोनों ही सच होता है।

वेदव्यास कृत महाभारत (लगभग 3137 ईसा पूर्व) के 'वनपर्व खंड' में देखा जा सकता है कि जब अर्जुन अस्त्रशस्त्र की शिक्षा हेतु स्वर्गलोक जाते हैं। अस्त्रशस्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात वे देवराज इंद्रा की आज्ञा से पांच वर्षों तक स्वर्ग में रहे तथा नृत्य एवं गायन कौशलता हेतु अभ्यास करने लगे। इसी दौरान एक दिन इंद्र ने देखा कि अर्जुन नृत्य करती उर्वशी की ओर निर्निमेष नेत्रों से देख रहे है। यह देख देवराज इंद्रा उर्वशी को संदेश भेजवाते है कि वह अर्जुन के पास जाकर उनकी सेवा करे। संदेश स्वीकार कर उर्वशी बड़ी लालसा से अर्जुन के सेवा हेतु उनकी कक्ष में पहुंचती हैं। कक्ष में पहुँच वह अर्जुन को बताती है कि अर्जुन के पिता इंद्रा तथा गंधर्व चित्रसेन की आज्ञा से उनके सेवा हेतु प्रस्तुत हुई है। यह बात सुनकर अर्जुन उर्वशी को बताते है कि उन्होंने देवसभा में उन्हें किसी बुरे भाव से कदाचित् नहीं देखा था। अर्जुन की यह बात सुन उर्वशी क्रोधित हो उठी तथा अर्जुन को नपुंसक होने का श्राप दे बैठी। अर्जुन शीघ्रतापूर्वक चित्रसेन के पास पहुँच उर्वशी द्वारा दिये गये श्राप की बात बताते है। चित्रसेन सारी बातें इंद्रा को बताते है, तत्पश्चात इंद्र अर्जुन से मिलकर उन्हें बताते है कि जिस समय वह तेरहवें वर्ष में गुप्तवास करेंगे उस समय उन्हें एक वर्ष के लिए छिपकर नपुंसक (किन्नर को नपुंसक कहकर संबोधित किया गया है) के रूप में यह श्राप भोगना होगा [3]।

विराटपर्व खंड में विराटपुत्र उत्तर द्वारा पूछे जाने पर कि 'पृथापुत्र अर्जुन, युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव तथा भीमसेन कहाँ हैं' के जवाब में 'बृहन्नला' नामक हिजड़े के भेष में मत्स्य जनपद की राजधानी विराटनगर के राजमहल में रहने वाले अर्जुन ने अपना परिचय देते हुए बताया कि वह स्वयं प्रथापुत्र अर्जुन हैं [4]। अर्जुन के इसी 'बृहन्नला' रूप को गुजरात के किन्नर अपना देवता मानते हैं।

महाभारत में ही एक और उल्लेख शिखंडी का मिलता है। भीष्म काशिराज की कन्या अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका को अपने रथ में बिठा काशिराज से हस्तिनापुर आते हैं। अपने भाई विचित्रवीर्य के लिए तीनों कन्याओं को माता सत्यवती को सौंप देते हैं। हस्तिनापुर पहुँच काशिराज की ज्येष्ठ पुत्री अम्बा भीष्म को बताती है कि वे मन ही मन रजा शाल्व को अपना वर मान चुकी हैं। अम्बा की बात सुनकर भीष्म उसे जाने की अनुमति देते हैं। अम्बा रजा शाल्व के पास पहुँच उन्हें सारी बात बताती है किन्तु शाल्व उसपर विश्वास नहीं करते है और अम्बा को त्याग देते हैं। इन सारी स्थितियों के लिए अम्बा भीष्म को दोषी मानते हुए उनसे बदला लेने के लिए सोचकर वहां से चली जाती हैं। तत्पश्चात अम्बा तपस्वियों के आश्रम पहुंचकर वह सारी बात परशुरामजी को बताती है। परशुराम भीष्म से मिलकर अम्बा को स्वीकार करने की आगया देते हैं। भीष्म द्वारा अम्बा को स्वीकार न करने के कारण दोनों के बीच युद्ध होता है। तमाम पितरों तथा नारद जी के आग्रह पर युद्ध बीच में रुक जाता है। यह सब देख अम्बा भीष्म के नाश के लिए तप करने का विचार कर वहां से चली जाती है। वह यमुनातट पर पहुंचकर एक आश्रम में गयी और वहां अलौकिक तप करने लगी। बारह वर्षों तक तप करने के पश्चात् आधे शरीर से अम्बा नाम की नदी हो गयी तथा आधे अंग से वत्स देश के राजा की कन्या के रूप में उत्पन्न हुई। इस जन्म में भी वह तपस्या करती रही। उसकी तपस्या को देख भगवान शंकर उसे दर्शन देते है और वर मांगने का प्रस्ताव देते हैं। अम्बा भीष्म का नाश करने का वर मांगती हैं। भगवान शिव अम्बा को वर देते है कि वह राजा द्रुपद के यहां कन्यारूप में जन्म लेकर भी कुछ समय पश्चात् पुरुष हो जाएगी। यह सुन अम्बा एक बड़ी चिता बनाकर उसमें प्रवेश कर जाती हैं।

महाराज द्रुपद की रानी को कोई संतान नहीं था। द्रुपद ने संतानप्राप्ति के लिए तपस्या किया और भगवन शिव को प्रसन्न किया। भगवन शिव ने महाराज द्रुपद को वाचन दिया कि उन्हें एक ऐसा पुत्र होगा जो पहले स्त्री होगा किन्तु बाद में पुरुष हो जायेगा। इस प्रकार राजा द्रुपद की रानी ने एक कन्या को जन्म दिया किन्तु लोगों को बताया गया कि रानी ने पुत्र को जन्म दिया है। पूरे नगर में द्रुपद के अतिरिक्त इस रहस्य को कोई नहीं जानता था। नगर में वह कन्या शिखंडी नाम से विख्यात हुई। बाद में शिखंडी का विवाह दर्शाणराज हिरण्यवर्मा की कन्या से होता है। हिरण्यवर्मा की कन्या को जब यह पता चलता है कि शिखंडी एक स्त्री है तो वह सारा वृतांत अपने पिता तक पहुंचाती है। वृतांत सुनकर हिरण्यवर्मा पंचालदेश पर आक्रमण करने का निर्णय लेते है। शिखंडी अपने माता-पिता को शोकाकुल स्थिति में देख एक निर्जन वन में चली गयी। वन में शिखंडी की भेंट स्थूणाकर्ण नामक यक्ष से होती है और दोनों आपस में कुछ समय के लिए एक-दूसरे से शरीर बदल लेते हैं। शिखंडी ने यक्ष का पुरुषत्व प्राप्त किया तथा स्थूणाकर्ण यक्ष ने स्त्रीत्व रूप धारण किया। इस तरह महाभारत में अलग-अलग प्रकार से किन्नरों का उल्लेख मिलता है।

वात्स्यायन ने 'कामसूत्र' (लगभग तृतीय शताब्दी) में किन्नरों के साथ-साथ स्त्री-स्त्री तथा पुरुष-पुरुष के बीच होने वाले यौनिक संबंधों की चर्चा की है। लेकिन सभी के लिए तृतीय प्रकृति शब्द का प्रयोग करते हैं। जिसका उल्लेख कुछ इस प्रकार मिलता है-

भाग 1, साधारणाधिकरण

अध्याय 5, (नायकसहायदूतीकर्मविमर्शः)

श्लोक (24)-भिन्नत्वातृतीया प्रकृतिः पञ्चमीत्येके

अर्थात स्त्री तथा पुरुष से भिन्न तृतीय प्रकृति (किन्नर) पांचवी प्रकार की नायिका है।

भाग-2, संप्रायोगिकाधिकरण

अध्याय 1, प्रमाणकालभावेभ्यो रतअवस्थापनम्

श्लोक (42)-प्रकृतेर्या तृतीयस्याः स्त्रियाश्चैवोपरिष्टके। तेषु तेषु च विज्ञेया चुम्बनादिषु कर्मसु ॥

इस श्लोक में वेश्याओं के साथ तृतीय प्रकृति अर्थात किन्नर का उल्लेख मिलता है। चुम्बन और आलिंगन से संबंधित प्रेम का विवरण है।

भाग-2, संप्रायोगिकाधिकरण

अध्याय 9, औपरिष्टक प्रकरण

श्लोक(1)-द्विविधा तृतीया प्रकृतिः स्त्रीरुपिणी पुरुषरूपिणो च ॥

तृतीय प्रकृति(किन्नर) के दो प्रकारों-स्त्री और पुरुष की चर्चा है।

श्लोक(2)- तत्र स्त्रीरुपिणी स्त्रिया वेषमालापं लीलां भावं मृवत्वं भीरुत्वं मुग्धतामसहिष्णुता व्रीडां चानुकुर्वीत ॥

किन्नर स्त्री का उल्लेख है जिसमें उसके चाल-ढ़ाल, रूप-रंग, हाव-भाव, शारीरिक बनावट आदि स्त्री की तरह है।

श्लोक(6)- पुरुषरूपिणी तु प्रच्छन्नकामा पुरुषं लिप्समानां संवाहक-भावमुपजीवेत् ॥

प्रस्तुत श्लोक पुरुष किन्नर से संबंधित है। पुरुष किन्नर के पुरुष से संभोग की इच्छा की चर्चा है।

भाग 5, परादिरकाधिकरण

अध्याय 6, अंतः पुरिका वृत्त प्रकरण

श्लोक(1)-नान्तः पुराणां रक्षणयोगात्पुरुषसंदर्शन विद्यते पत्युश्चैकत्वादनेक-कसाधारमत्वाच्चातृप्तिः।

तस्मात्तानि प्रयोगत एव परस्परं रञ्जयेयुः ॥

श्लोक के अनुसार महलों में सख्त पहरा रहता था जिससे की कोई पुरुष महल में प्रवेश न कर सके। एक राजा की कई रानियां होती थी। रानियां आपस में एक-दूसरे के साथ संभोग करती थी।

श्लोक(2)-प्रयोगमाह-धात्रेयिकां सखीं दासीं वा पुरुषवदलंकृत्याकृतिसंयुक्तैः कंदमूलफलावयवैर-पद्रव्यैर्वात्माभिप्रायं निवर्तयेयुः ॥

धाय की पुत्री, सखी-सहेलियां, दासी आदि पुरुष का वस्त्र धारण कर रानियों के साथ संभोग किया करती।

वराह मिहिर का 'वृहत जातक' (बारहवीं सदी) मूल रूप से संस्कृत में लिखा गया है। 28 अध्यायों में विभाजित इस ग्रन्थ में 407 श्लोक है। जिसमें किन्नरों सहित समलैंगिक स्त्रियों का चित्रण हुआ है।

अध्याय 4, निषेकाध्याय

श्लोक(13)-अन्योन्यं यदि पश्यतः शशिरवी यद्यार्किसौम्यावपि

वक्रो व समंग दिनेशमसमे चन्द्रोदयौ चेत् स्थितौ ।

युग्मौजर्क्षगतावपींदुशशिजौ भूम्यात्मजेनेक्षितौ

पुम्भागे सितलग्नशीतकिरणाः शट् क्लीबयोगास्स्मृताः ॥ 13 ॥

पंडित महीधर शर्मा ने श्लोक की व्याख्या करते हुए लिखा है " अथ नपुंसक योग । समराशि में बैठा चन्द्रमा विषमराशि के सूर्य को पूर्ण देखे और सूर्य भी चन्द्रमा को देखे तो एक योग, शनि समराशि में बुध विषम में दोनों परस्पर देखें तो दूसरा योग, मंगल विषम में हो सूर्य समराशि में और दोनों परस्पर देखें तो तीसरा योग, लग्न चन्द्रमा विषमराशि में हो और समराशि में बैठा मंगल चन्द्रमा दोनों को देखे तो यह चौथा योग, सम में चन्द्रमा विषम में बुध हो और मंगल देखे तो यह पांचवा योग, शुक्र लग्न चन्द्रमा विषम नवांशों

में हो तो यह छठा योग है, ये योग प्रश्न आघान में पड़े तो नपुंसक जन्मेगा, जन्मपत्री में भी ऐसे योग हो तो वह हतवीर्य्य या हिजड़ा होगा"[5]।

अध्याय 24, स्त्रीजातकाध्याय

श्लोक(4)-दुष्टा पुनर्भुः सगुणा कलाज्ञा ख्याता गुणैश्चासुरपूजितर्क्षे ।

स्यात्कापटी क्लीबसमा सती च बोधै गुणाढया प्रविकीर्णकामा ।।4 ।।

इस श्लोक में हिजड़े के सूरत की चर्चा तथा इसी अध्याय के पांचवे श्लोक में पुरुष के समान आचरण करने वाली स्त्री के जन्म तथा सातवें श्लोक में समलैंगिक स्त्रियों के संभोग की चर्चा है।

अध्याय 27, द्रेष्काणफलाध्यायः

श्लोक(30)-किन्नरोपमतनुः सकम्बलस्तूणचापकवचैस्समन्वितः ।

कुम्भमुद्रहति रत्नचित्रितं स्कन्धगं मकरराशिपश्चिमः ।।30।।

प्रस्तुत श्लोक में वराह मिहिर ने किन्नर के हाव-भाव तथा शारीरिक संरचना का उल्लेख किया है।

पंडित महीधर शर्मा श्लोक की व्याख्या करते हुए लिखते है किन्नर देवयोनि हैं। घोड़े का सा मुख उनका रहता है। उनके समान शरीर, कम्बलधारी, तुणीर, धनुप, बख्तर धारण कर्त्ता, रत्नसहित कुम्ज कांधे पर ले रहा, ऐसा रूप मकर के तीसरे द्रेष्काण का है। यह सायुध पुरुष द्रेष्काण है।

कृतिवास ओझा की रचना 'कृतिवास रामायण' (15 वीं शती) में चंद्रा और माला नामक दो रानियों के मिलन से भागीरथ का जन्म होता है। इसी तरह भागवत पुराण में विष्णु के मोहिनी रूप को देखा जा सकता है। मोहिनी से शिव आकर्षित होते हैं और उनके मिलन से अयप्पा का जन्म होता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में विषमलैंगिक यौनिक संबंधों को वैध तथा इससे इतर अन्य सभी संबंधों को दंडनीय माना गया

है। मनुस्मृति में स्त्रियों के बीच तथा पुरुषों के बीच के संबंध को दर्शाया गया है तथा स्त्रियों के बीच के प्रेम संबंध को पुरुषों के बीच के प्रेम संबंध की अपेक्षा अधिक दंडनीय बताया गया है। जैन तत्वार्थसूत्र में नपुंसकों को इन्टरसेक्शुअल तथा उभयलैंगिक रूप में देखा गया है। शुरुआती जातक कथाओं में समलिंगी प्रेम का चित्रण हुआ है। सूफ़ीवाद में भी समलैंगिक पुरुष का चित्रण हुआ है। [6]

एंगेल्स अपनी पुस्तक 'परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति' में किन्नरों (हिजड़ों) का उल्लेख करते हैं। वे लिखते है कि " एशिया के शहरों में, औरतों पर पहरा देने के लिए हिजड़े रखे जाते थे। हेरोडोटस के काल से ही कियोस द्वीप में बेचने के लिए हिजड़े बनाये जाते थे" [7]।

हजारीप्रसाद द्विवेदी अपने निबंध 'अशोक के फूल' में किन्नरों का उल्लेख करते हैं -"प्रकृत यह है कि बहुत पुराने ज़माने में आर्य लोगों को अनेक जातियों से निबटना पड़ा था। जो गर्वीली थीं, हार मानने को प्रस्तुत नहीं थीं, परवर्ती साहित्य में उनका स्मरण घृणा के साथ किया गया और जो सहज ही मित्र बन गई उनके प्रति अवज्ञा और उपेक्षा का भाव नहीं रहा। असुर,राक्षस, दानव और दैत्य पहली श्रेणी में तथा यज्ञ, गंधर्व, किन्नर, सिद्ध, विद्याधर, वानर, भालू आदि दूसरी श्रेणी में आते हैं" [8]।

"स्त्री या पुरुष कुछ भी बन सकने की उनकी क्षमता उन्हें राजकीय जासूसों के पद भी दिलवाती थी। दरबार हो या मंदिर, वे अपनी नृत्यकला का प्रदर्शन करके वाहवाही भी लूट सकते थे। इनाम-इकराम भी कमाते थे। बादशाहों के हरम में सुरक्षाकर्मी होते थे, औरतों के साथ सेक्स न कर सकना उनकी कमी नहीं, खूबी थी। किसी हिजड़े को यह बघनखा राजा की बेटी को एक शैतान मंत्री के पंजे से बचाने के लिए मिला था, इनाम स्वरुप। हिजड़ों का तिरस्कार तो अंग्रेजों के ज़माने से शुरू हुआ" [9]। ब्रिटिश शासन काल में किन्नरों को कॉर्नर कर दिया गया। इनके विरुद्ध धराएं लागू कर दी गयी। यहीं से इनकी स्थिति बिगड़ती चली गयी और 'बधाई' के साथ-साथ इन्होंने अपना पेट पालने के लिए भीख मांगना शुरू किया और कुछ किन्नरों ने शरीर तक बेचना शुरू कर दिया। दिन पर दिन इनकी स्थिति दयनीय होती चली गयी। समाज

इनसे कटता गया और ये समाज से कटते गये। और इस दूरी से इनके संबंध में कई तरह की धारणाएं और गलतफहमियाँ पैदा होती चली गयी जो बहुत हद तक आज भी हमारे समाज में व्याप्त है।

किन्तु इधर लगभग 15-20 वर्षों से कुछ सक्रिय संगठन और संस्थाएं सक्रियतापूर्वक इनके अधिकारों के लिए अपनी आवाज बुलंद कर रहे हैं। देश-दुनिया के सामने उनकी संस्थाएं उनके पक्ष को रख रही है। कानूनन बदलाव हो रहे हैं।

वर्तमान दौर और एलजीबीटीक्यूजन : सिनेमा के संदर्भ में

सिनेमा मानव जीवन की विविधता को प्रस्तुत करने वाला श्रव्य-दृश्यमूलक माध्यम है जिसका प्रभाव जनमानस पर सबसे अधिक पड़ता है। समाज के विकास और परिवर्तन का प्रभाव सिनेमा पर और सिनेमा की बोधमुलक दृष्टि का प्रभाव समाज में प्रारंभ से ही देखा जा सकता है। साहित्य, जीवनी, आत्मकथा के साथ ही साथ अब सिनेमा जेंडर और यौनिकता जैसे संवेदनशील विषय को भी लेकर चला है। मशहूर बंगाली फिल्म निर्देशक ऋतुपर्णो घोष ने 'चित्रांगदा' और 'मेमोरीज इन मार्च' जैसी फिल्मों के माध्यम से जेंडर और यौनिकता की जटिलता को मार्मिकता व साफगोई के साथ चित्रित किया है। ऋतुपर्णो जानते थे कि भारतीय समाज इस विषय को लेकर बेहद सिमटा हुआ है। वह जानते थे कि भिन्न जेंडर और तयशुदा यौनिकता से बाहर पैर पशारता व्यक्ति आज भी समाज और परिवार के लिए सहज स्वीकार्य नहीं है।

जेंडर और यौनिकता से जुड़े भावनात्मकता और संवेदनशीलता को ऋतुपर्णो घोष ने अपनी फिल्म 'चित्रांगदा' व 'मेमोरीज इन मार्च' फिल्मों में ढालने की कोशिश की है। बॉलीवुड में इस विषय को लेकर ऐसी बहुत कम फिल्में बनी है जिनमें विषय और पात्रों को गंभीरता से दिखाया गया हैं। 'चित्रांगदा' में पात्र, भाषा तथा अभिनय के बीच अद्भूत सामंजस्य दिखाई देता है। इस लिहाज से ऋतुपर्णो घोष की यह दोनों फिल्में महत्वपूर्ण हैं। इन फिल्मों ने उन तमाम अगंभीर फिल्मों पर प्रश्नचिह्न लगाया है जिनमें विषय को महज विषय के लिए चुन लिया गया है।

कुछ फिल्मों ने समलैंगिकता के दो रूप दिखाये हैं। पहली समलैंगिक रिश्तों में विषमलैंगिक रिश्तों सी भूमिका और दूसरी है आपसी संबंधों में विच्छेद; जिसने समलैंगिकता के गुत्थियों को उलझाने का भरपूर प्रयास किया। दोनों ही पितृसत्तात्मक समाज के अनुरूप सांचे में ढली हुई होती हैं। जिसका प्रभाव जनसाधारण पर होता है। इस भ्रमित सच का छाप मानसिक पटल पर प्रतिबिंबित होता है और एक नकारात्मक अवधारणा का गठन करता है जिसका वास्तविकता से सरोकार नहीं होता है।

यौनिकता पर चर्चा करना हमारे समाज में आसान नहीं है, यही कारण है कि क्वीयर संबंधों, समलैंगिकता तथा ट्रांसजेंडर पर केन्द्रित फिल्में जब भी बनी वह या तो अधिकांशतः अनुमान पर आधारित रही है या आधे-अधूरे ज्ञान में सिमटती नजर आती हैं। पर कुछ फिल्में ऐसी भी रही है जिन्होनें क्वीयर संबंधों व उनकी जटिलताओं के बारे में समझ बनाने और समाज में प्रवेश कर गयी भ्रमित धारणाओं को तोड़ने का भी प्रयास किया है।

‘फायर’ (1996) : दीपा मेहता

‘फायर’ फिल्म एक संयुक्त परिवार की कहानी है। फिल्म के दोनों केंद्रीय पात्रों के बीच एक तरफ समलैंगिक संबंध दिखायी देता है, तो दूसरी तरफ वे दोनों पात्र पुरुष द्वारा नियंत्रित सेक्सुअलिटी को चुनौती देते हुए भी दिखाई देते हैं। अगर बात फिल्म के कथानक की करें तो हम पाते है कि राधा और सीता का वैवाहिक जीवन दुखमय है तथा उनके बीच समलैंगिक सम्बन्ध हैं। अर्थात वे पुरुषों के अभाव में एक-दूसरे के करीब आती हुई दिखती हैं। यह दिखाना कहीं न कहीं उस विचारधारा को पुष्ट करती है जो यह मानते है कि एक-दूसरे को खुश नहीं रख पाने वाले लोग ही समलैंगिक रिश्तें में बंधते हैं। बेशक इस फिल्म को पहले-पहल भारत में व्यापकता से समलैंगिक मुद्दे को चर्चा के केंद्र में लाने का श्रेय जाता है, लेकिन इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि फिल्म से समलैंगिकता के प्रति नकारात्मक रुख उभरता है। पुरुषों के अभाव में स्त्रियों के बीच बने समलैंगिक सम्बन्ध को दिखाने के पीछे पितृसत्तात्मक मानसिकता काम करता है। यह

मानसिकता विषमलैंगिक संबंधों को सहज तथा अनिवार्य बनाने की तुष्टिकरण करता चलता है। मैरी ई.जॉन और तेजस्विनी निरंजना के अनुसार- "दीपा मेहता की फिल्म समकालीन संस्कृति के दायरों में इतरलैंगिकता की चौधराहट पर प्रकाश डालती है, पर साथ ही उसकी बगावती संभावनाएं उस समय बेअसर हो जाती हैं जब फिल्म आम तौर पर यह संदेश देती नज़र आती है कि अगर पुरुष अपनी पत्नियों की सेक्सुअल जरूरतों को नकारेंगे तो वे लेस्बियन हो जाएँगी" [10]। वी.एस. भी इस संदर्भ में अपनी बात रखते हुए कहती है कि "फिल्म की केंद्रीय चरित्र देवरानी-जेठानी हैं जो गैर-लेस्बियन किस्म की लेस्बियन दिखाई गई हैं। मुझे लगा कि फिल्म की निर्देशक अपने किरदारों को सताने वाली मुख्य दुविधा से कटी हुई हैं"[11]।

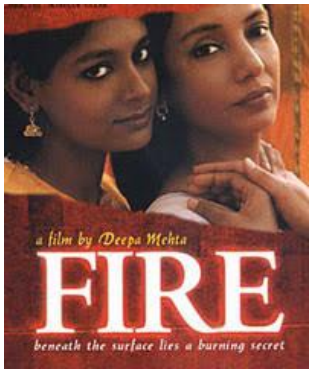

Source: https://encrypted-tbn0.gstatic.com/images?q=tbn:ANd9GcTTtBlfmfhEE5ceRU8iOvsZYADVssDth_XOKA&usqp=CAU

राधा और सीता के बीच हुए उस संवाद को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता जिसने फिल्म में उठाये इस मुद्दे को समझने का सीधा -सीधा और स्पष्ट तो नहीं पर एक धुंधला इशारा तो दिया ही है। राधा

जब सीता को कहती है कि "उसके और जतिन के बीच सब कुछ ठीक हो जायेगा"[12] तो सीता कहती है कि "उसकी समस्या तो कुछ और है"[13] और उसके बाद वह राधा के होठ चूम लेती है। इस पंक्ति से यह स्पष्ट होता है कि राधा और सीता अपने रिश्तों से दुखी जरुर है पर उनके बीच के रिश्तें का आधार मज़बूरी कत्तई नहीं है। " 'फायर' उस अपराध बोध की पड़ताल करने का भी कोई प्रयास नहीं करती, जो विकृत और वर्जित करार दिए जाने वाले यौनाचरण के साथ आम तौर पर जुड़ा होता है। फिल्म में सदमें, भय, गुस्से, शर्म, द्वैध, वाकछल जैसी कई भावनाओं की भी पड़ताल नहीं की है। जिनका समलैंगिकों को अक्सर सामना करना पड़ता है"[14]।

फिल्म ने महज समलैंगिकता के पहलू को उठाया है, इस सन्दर्भ से उसका कोई ख़ास ताल्लुक नहीं दिखाई देता। फिल्म प्रेम, चाहत तथा यौनिक आवश्यकता से वंचित स्त्रियों की कहानी अधिक जान पड़ती है। फिल्म में लेस्बियन संघर्ष नहीं दिखाई देता।

दरमियान: इन बिटवीन (1997) : कल्पना लाजमी

कल्पना लाजमी के निर्देशन में बनी 'दरमियान: इन बिटवीन' एक जन्मजात किन्नर बच्चे की कहानी है। इम्मी (अरीफ़ जकारिया) जन्म से ही किन्नर रूप में पैदा हुआ है। इम्मी की मां जिन्नत (किरण खेर) उससे बेहद प्यार करती है। इम्मी भी जिन्नत से बहुत प्यार करता है। बचपन से ही चंपा (किन्नर) जिन्नत से इम्मी को किन्नर समुदाय को सौंपने के लिए कहती रही लेकिन जिन्नत इम्मी को अपने-आप से अलग करने के बारे में कभी सोच ही न सकी। जिन्नत जानती थी कि उसका बच्चा इम्मी किन्नर था लेकिन वह यह मानने को तैयार नहीं थी। यह समाज में फैले किन्नरों के प्रति घृणा और भय को दर्शाता है। फिल्म में इम्मी जैसे जन्मजात किन्नर बच्चे की पीड़ा भी है और समाज का किन्नर के प्रति क्रूर तथा अमानवीय रवैया भी। इम्मी बचपन से ही किन्नरों से भयभीत दिखायी देता है जिसका कारण किन्नरों को समाज से मिलने वाली निराशा

Commented [MO1]:

और अपमान है। जो उसके मन-मस्तिष्क में बैठी हुई है। वह जानता है कि समाज के स्त्री और पुरुष बाइनरी व्यवस्था से भिन्न है लेकिन उसे कोई किन्नर कहे इसके लिए वह तैयार नहीं था।

Source: https://www.google.com/imgres?imgurl=https%3A%2F%2Fimages-na.ssl-images-amazon.com%2Fimages%2FS%2Fpv-target-images%2F4b25632b6b0ca96786dc7c082e0b368889706061a9a7b9580c7306c8b07b50b8._RI_V_TTW_.png&imgrefurl=https%3A%2F%2Fwww.primevideo.com%2Fdetail%2FDarmiyaan-In-Between%2F0HKD5D3IK0KWVQ8I3JOPP6IWHA&tbnid=Z6kMaytjJUtk6M&vet=12ahUKEwjX29jJ8MH0AhXPeysKHYTHBEEQMygFegUIARC6AQ..i&docid=C7G6NlnM1UI8CM&w=1920&h=1080&q=darmiyan%20in%20between%20movie%20images&ved=2ahUKEwjX29jJ8MH0AhXPeysKHYTHBEEQMygFegUIARC6AQ

फिल्म के अंत में किन्नरों के जीवन और उनके संघर्षों की कहानियां उभरकर सामने आती है। उन विपत्तियों और संकटों की कहानियां जो उन्हें समाज से काटने और एक अलग समुदाय में ला पटकने की स्थिति को बयां करती है। पेट की भूख मिटाने के लिए इम्मी किन्नरों का वेश-भूषा धारण करता है और इम्मी से सितारा बन जाता है। जिस समुदाय से वह बचपन से भागता रहा अंत में उसे वहीं आना पड़ा।

निर्देशक ने फिल्म के अंत में चंपा और किन्नरों के समूह को जिस रूप में दिखाया है उससे उनके प्रति भय लाजमी है, यही कारण है कि इम्मी उनके बीच नहीं रह पाता और वहां से भाग निकलता है। चारों तरफ से दुतकारे और ठुकराएं जाने के बाद विवश इम्मी कहता है कि "मुझे तो हमेशा से बस यही सिखाया

गया था कि एक हिजड़ा सबसे अलग होता है, वह कभी बाकियों की तरह जिंदगी नहीं गुजार सकता। .... एक हिजड़े की जिंदगी बहुत ही मनहुष है .... मेरी आपा (मां) को मेरा जन्म होते ही मुझे हिजड़ों को दे देना चाहिए था। .... पर अब मेरी जगह ना तो इस दुनिया में है और ना हिजड़ों की दुनिया में। दोनों की दरमियान हूँ मैं"[15]।

अतः एक तरफ हम चाहते है कि समाज में किन्नरों के प्रति संवेदनशीलता बढ़े, लोग उन्हें भी इंसान समझे। लेकिन किन्नरों द्वारा स्वयं को दुत्कारता दिखाकर निर्देशक ने किन्नरों के प्रति अपने तयशुदा पूर्वाग्रह को व्यक्त किया है।

तमन्ना (1997) : महेश भट्ट

महेश भट्ट के निर्देशन में बनी फिल्म 'तमन्ना' एक वास्तविक घटना से प्रेरित है। "सन् 1975 में रमजान के महीने में एक गरीब किन्नर ने एक छोटी बच्ची को मुंबई के 'महिम' नामक सड़क से उठाकर उसका पालन-पोषण किया। उस बच्ची का नाम उसने 'तमन्ना' रखा"[16]। जिसके आधार पर यह फिल्म बनी है।

टिक्कु अली सय्यद (परेश रावल) नामक ट्रांसमेन फिल्म का केन्द्रीय चरित्र है। टिक्कु एक मेकअप आर्टिस्ट है। यह फिल्म टिक्कु अली सय्यद नामक किन्नर और तमन्ना (पूजा भट्ट) के बीच के भावनात्मक संबंध को व्यक्त करता है। किन्नर जिन्हें समाज में अवहेलना का शिकार होना पड़ता है, जिसे सभ्य समाज असभ्य समझता है, अमानवीय व्यवहार करता है, उसने मानवीयता का सबसे बड़ा उदाहरण प्रस्तुत किया है। जिस सभ्य समाज ने एक फूल जैसी छोटी बच्ची को फेंक कर अपनी अमानवीयता को पेश किया वही टिक्कु ने उसे उठाकर अपने कलेजे से लगाकर, पढ़ा-लिखाकर मानवीयता का उदाहरण पेश किया। इस तरह फिल्म ने किन्नरों की संवेदनशीलता और मानवीयता को तो दिखाया ही है लेकिन उस तथाकथित सभ्य समाज के मुखौटे का पर्दाफाश भी किया है जो क्रूर और घिनौना है।

Source: https://encrypted-tbn0.gstatic.com/images?q=tbn:ANd9GcR0eSJh8epWlgXvNQMg4o_eX64nfEmkiYJ34Q&usqp=CU

प्रारंभ में तमन्ना नहीं जानती थी कि उसके पिता टिक्कु किन्नर है। हॉस्टल से आई बड़ी हो चुकी तमन्ना को जब अचानक पता चलता है कि उसके पिता टिक्कु अली किन्नर है तो वह टिक्कु को स्वीकार नहीं कर पाती और क्रोधित हो कह उठती है। वह कहती है कि "यह आदमी मेरे पिता नहीं हो सकते। यह तो एक हिजड़ा है"[17]। तमन्ना के मुंह से इस कड़वी बात को सुन कर टिक्कु पूरी तरह टूट जाता है। वह रोता-बिलखता है। टिक्कु की इस स्थिति को देख सलीम चाचा (मनोज बाजपेई) तमन्ना से कहता है कि "तेरे जबान में छाले नहीं पड़ गये इसे हिजड़ा कहते हुए? दुनियाँ में कोई किसी के लिए क्या करेगा जो इसने तेरे लिए किया। छोड़ गये थे तुझे तेरे अपने कचड़े के डब्बे में सड़ने के लिए। .... रात-रात भर सिने से चिपका कर जागता रहा ताकि तू सो सके। नंगे पाव चला, भूखा रहा ताकि तुझे खिला सके"[18]। एक किन्नर की विवशता और अपने बच्चे को खो देने की पीड़ा को तब भलीभाँति देखा जा सकता है जब टिक्कु कहता है कि "सलीम भाई जब ऊपर वाले ने मुझे हिजड़ा बनाया है तो इसमें मेरा क्या दोष है?"[19]।

सलीम चाचा से सारी सच्चाई सुनने के बाद तमन्ना पिघल जाती है और अंततः अपने पिता टिक्कु को स्वीकार कर लेती है।

शबनम मौसी (2005) : योगेश भारद्वाज

योगेश भारद्वाज के निर्देशन में फिल्म 'शबनम मौसी' 2005 में बनी थी। फिल्म सन् 1998 में मध्यप्रदेश के सुहागपुर विधानमंडल से जीत हासिल कर विधायक बनी शबनम मौसी के जीवन पर आधारित है। फिल्म में केन्द्रीय पात्र की भूमिका आशुतोष राणा ने निभायी है। अन्य पात्रों के रूप में गोविंद नामदेव तथा विजय राज की अहम भूमिका है। प्रसिद्ध किन्नर शबनम मौसी के नाम पर बनी यह फिल्म किन्नर समुदाय को सामने लाने का प्रयास है।

यह कहानी एक पुलिस अफसर के घर जन्मी किन्नर बच्चे की है। जिसे किन्नर होने के कारण किन्नर समुदाय के सुपुर्द कर दिया जाता है। हलीमा (विजय राज) को इस किन्नर बच्चे के पालन-पोषण का दायित्व मिलता है। किन्नर समुदाय की गुरु अम्मा (विश्वजीत प्रधान) हलीमा को इस बच्चे का दायित्व सौंपती है। हलीमा इस बच्चे का नाम 'शबनम' रखती है। शबनम को समाज और अपने ही बिरादरी के तिरस्कार का सामना करना पड़ा। पग-पग पर उसे ठोकरे मिली। हलीमा की हत्या के आरोप में बिरादरी की गुरु अम्मा ने उसे बहिष्कृत किया, तो समाज के प्रशासन ने उसपर कोड़े बरसाये। हमारा समाज किन्नर को इतना भयावह मानता है कि उसे किसी श्रेणी में नहीं रखता। समाज के मुख्यधारा को एक अपाहिज या विकलांग तो स्वीकार्य है किन्तु एक किन्नर कत्तई स्वीकार्य नहीं है। जहां एक तरफ किन्नर के प्रति समाज की अमानवीयता दिखती है तो वही दूसरी तरफ इसी समाज के एक पात्र 'इकबाल' की मानवीयता। इकबाल को शबनम से बेहद प्रेम है। यह जानने के बावजूद कि वह एक किन्नर है।

Source: https://encrypted-tbn0.gstatic.com/images?q=tbn:ANd9GcTXOLq8UkbhgPMiBx0GA-U-IwkgMsBWdxehaQ&usqp=CAU

फिल्म में सभ्य समाज की सभ्यता और खोखले मानकों का पर्दाफाश हुआ है। शबनम मौसी ने नयना नाम की लड़की की इज्जत इसी सभ्य समाज के तथाकथित सभ्य पुरुषों से बचाकर समाज के मुंह पर तमाचा मारा है। जब लोलो (किन्नर) कहती है कि "समाज ने उसे इसीलिए बाहर निकाल दिया क्योंकि वह उनके जैसी नहीं है और अम्मा (किन्नर समुदाय की गुरु) ने किन्नर समुदाय से इसीलिए बहिष्कृत कर दिया क्योंकि वह उन जैसी नहीं रहती"[20] । लोलो का यह कथन समाज के साथ -साथ किन्नर समुदाय पर भी सवाल खड़े करता है। समुदाय के भीतर का सच उभरकर सामने आता है कि समुदाय के निर्धारित मानकों के तहत लोलो को भिन्न पहनावे तथा व्यवहार के कारण किन्नर समाज से बाहर कर दिया गया।

फिल्म 'शबनम मौसी' समाज में किन्नर समुदाय के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास है। शबनम मौसी द्वारा विधायक पद के लिए खड़े होने और जीतने के हौसले ने अन्य किन्नरों को भी प्रोत्साहित व उनमें आत्मविश्वास भरने का काम किया। निर्देशक यह संदेश पहुंचाने में सफल हुए है कि किन्नर समुदाय इसी समाज का हिस्सा है, इनका जन्म इसी समाज में होता है, वह किसी भी क्षेत्र में सामान्य कहे जाने वाले किसी भी व्यक्ति से कमतर नहीं है। किन्तु यह विडंबना ही है कि ऐसे विषयों पर फिल्म बनाते हुए निर्देशक

एक तरफ इन्हें ताकतवर, विवेकशील और संवेदनशील दिखाते है तो दूसरी ओर उन्हें कायर, नपुंसक, नामर्द इत्यादि नकारात्मक शब्दावलियों के पर्याय के रूप में परिभाषित तथा तुलना करते है।

माई ब्रदर निखिल (2005) : ओनिर

ओनिर के निर्देशन में बनी फिल्म 'माई ब्रदर निखिल' एक तैराक के जीवन पर आधारित है। जिसका नाम निखिल कपूर(संजय सूरी) है। निखिल समलैंगिक (गे) है। फिल्म 2005 में बनी थी, तब जब समलैंगिकता और एड्स से जुड़े विषयों पर खुलकर कोई बातचीत नहीं होती थी।

Source: https://encrypted-tbn0.gstatic.com/images?q=tbn:ANd9GcTze2ymhrouqezuhni_FYj8OmsrGEk3wyJ8aQ&usqp=CAU

कहानी पीड़ित निखिल के जीवन-संघर्षों की है। एड्स के प्रति फैली तत्कालीन समाज की भ्रांतियों ने निखिल को पग-पग पर ठोकरे खाने को मजबूर किया। समाज सहित उसके परिवार वालों तक को लग रहा था कि निखिल के एड्स का कारण समलैंगिक संबंध है। समाज में फैली इस भांति के कारण लोग उससे तथाकथित किसी अछूत की तरह व्यवहार करते हैं। निखिल को परिवार से बाहर कर दिया गया। उसे समझने और उसका साथ निभाने वालों में केवल उसकी बहन अनामिका कपूर (जूही चावला) तथा उसका पार्टनर

नाइजेल डी कोस्टा (पूरब कोहली) था। जो स्वयं भी समलैंगिक था। निखिल ने अपनी समलैंगिकता के बारे में परिवार से खुलकर नहीं कहा था क्योंकि वह जानता था कि उसे वह नहीं समझ पाएंगे और ना ही उसकी समलैंगिकता को स्वीकार ही कर पाएंगे। और हुआ भी यही। जब लोगों को पता चला कि निखिल समलैंगिक है और एड्स पीड़ित भी तो आस-पास के लोगों के साथ-साथ उसके अपने परिवार वालों ने भी उससे मुंह मोड़ लिया। माता-पिता अपने बच्चे निखिल और शहर दोनों को छोड़कर चले जाते हैं। लेकिन उसकी बहन अनामिका उसे छोड़कर कहीं नहीं जाती और अंत तक उसके हक और अधिकार की लड़ाई लड़ती है। साथ मिलकर वह इस भेदभाव के खिलाफ लड़े और अंततः जीते भी। किन्तु कानूनी रूप से जीत हासिल करने के बाद निखिल स्वतंत्र तो होता है लेकिन समाज के अस्वीकार्यता और असंवेदनशीलता के कारण उसे कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। उसे कहीं कोई काम नहीं मिलता। वह टूट जाता है। अकेला महसूस करता है। लेकिन धीरे-धीरे परिस्थितियाँ बदलती है और देर से ही सही लेकिन उसे उसका परिवार वापस मिल जाता है। परंतु कमजोड़ पड़ता निखिल अंततः बीमार होता चला गया और उसकी मृत्यु हो गई।

ट्राफिक सिग्नल (2007) : मधुर भंडारकर

किन्नर इसी समाज का हिस्सा है। यह यथार्थ है। एक ऐसा यथार्थ जिसकी मौजूदगी कल से लेकर आज तक देखी जा सकती है। दो घटकों स्त्री और पुरुष को मान्यता देने वाले समाज में किन्नरों पर बातें बेशक नहीं की जाती रही लेकिन इस सत्य से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता कि अमूमन हम इन्हें ट्रेन, बस, रेलवे स्टेशन, बाजार और ट्राफिक सिग्नल पर भीख मांगते हुए देखते है। ट्राफिक सिग्नल पर भीख मांगने वाले ऐसे ही किन्नरों का उल्लेख मधुर भंडारकर के निर्देशन में बनी फिल्म 'ट्राफिक सिग्नल' में हुआ है। फिल्म में किन्नरों की समस्या को व्यापकता से नहीं उठाया गया है। 'ट्राफिक सिग्नल' नाम से बनी इस फिल्म में

ट्राफिक सिग्नल को केंद्र में रखकर वहां भीख मांगने वाले लोगों की जिंदगी और कहानी को पेश किया गया है। जिसमें किन्नर भी शामिल है।

आजीविका से जूझते किन्नरों का उल्लेख तो मिलता ही है साथ ही समलैंगिक चरित्र भी दिखाई देता है। गुल्लु समलैंगिक है जिसे 'बॉटम गे'[21] के रूप में दिखाया गया है।

आई एम (2011) : ओनिर

2011 में ओनिर के निर्देशन में बनी फिल्म 'आई एम' चार अलग-अलग कहानियों से मिलकर बनी है। 'आफिया' स्पर्म डोनेशन पर आधारित है, 'मेघा' कश्मीरी पंडितों पर, 'अभिमन्यु' बाल-शोषण को लेकर और 'ओमार' गे (समलैंगिक) अधिकारों पर आधारित है। हम यहां केवल 'अभिमन्यु' और 'ओमार' की कहानी पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

'अभिमन्यु' कहानी 'अभिमन्यु' नामक एक लड़के के जीवन पर आधारित है। यह कहानी उस पारंपरिक मिथकीय आधार पर बनाई गई है जिसके अनुसार यौनिक शोषण के कारण किसी के यौनिक चाहत (Sexual Preference) में बदलाव होता है। फिल्म भी इसी मानसिकता का अनुसरण करती दिखती है कि कैसे अपने सौतेले पिता विनय (अनुराग कश्यप) के द्वारा बचपन से ही यौनिक शोषण का शिकार अभिमन्यु (संजय सूरी) का यौनिक चाहत बदल जाता है। अभिमन्यु अपने साथ हुए इस शोषण के बारे में किसी को नहीं बताता है क्योंकि इसके जरिए उसकी भौतिकतावादी जरूरते पूरी हो रही थी।

फिल्म बाल-शोषण (पिडोफिलिया) पर आधारित है। जिसे समलैंगिकता से जोड़ने की कोशिश की गयी है। अभिमन्यु का अक्सर यह सपना देखना कि 'वह एक लड़की है' का स्पष्टीकरण दिखाई नहीं देता। अभिमन्यु स्वयं को किस रूप में पहचानता है यह अंत तक स्पष्ट नहीं होता है। अभिमन्यु शुरू से अंत तक अपने सपने और सौतेले पिता द्वारा हुए यौन-शोषण के शिकार के बीच उलझा और फंसा हुआ दिखता है।

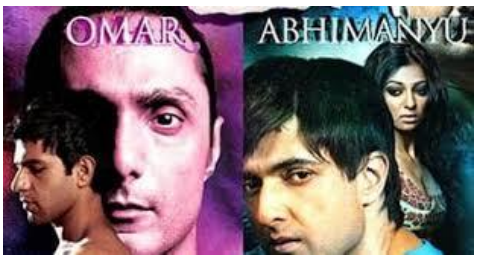

Source: https://encrypted-tbn0.gstatic.com/images?q=tbn:ANd9GcQhyKLmVTdvGlEKO9ncnsyhAd5S8PVtWMkHaQ&usqp=CAU

'ओमार' एक 'गे' के साथ होने वाले अत्याचार, शोषण और अमानवीयता की कहानी है। फिल्म में दिखाया गया है कि कैसे एक व्यक्ति को 'गे' होने के कारण मानसिक और आर्थिक रूप से शोषित किया गया। जिन देशों में समलैंगिकता को वर्जित माना जाता है, वहां कैसे एक व्यक्ति अपनी समलैंगिकता के कारण दुर्व्यवहार का शिकार होता है।

मल्टीनैशनल कंपनी का मैनिजिंग डायरेक्टर जय गोवड़ा (राहुल बोस) 'गे' है। वह किसी काम से मुंबई आता है जहां उसकी मुलाकात ओमार (अर्जुन माथुर) से होती है। जय, ओमार के साथ कुछ समय बिताता है और उसे ऐसा लगता है जैसे ओमार भी 'गे' है। दोनों एक-दूसरे के करीब आते है। तभी उन दोनों को एक पुलिसवाला पकड़ लेता है। उन दोनों को मारता है, उनके साथ दुर्व्यवहार करता है और उन्हें बुरी तरह प्रताड़ित करता है। जय से पैसे ऐंठता है और सब को बताने की धमकी देता हुआ लगातार ब्लैक्मेल करता है। जय ऐसे में बहुत डर जाता है। डरा-सहमा जय बड़ी मुश्किल से इस स्थिति से निकलता है। लेकिन अगले दिन जब जय को पता चलता है कि ओमार 'गे' नहीं बल्कि 'गे' होने का नाटक किया है तथा उसने पुलिसवालों के साथ मिलकर उसे लूटने की योजना बनायी थी, तो वह पूरी तरह टूट जाता है।

ओनिर इस कहानी के मध्यम से उस मनःस्थिति को व्यक्त करते है जिसने जय को बिल्कुल असहाय स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया। 'ओमार' के मध्यम से ओनिर ने समलैंगिकता जैसे एक ऐसे विषय को सामने लाने का प्रयास किया है जिस पर तात्कालिन समाज में कम से कम बातचीत की जा रही थी।

ये फिल्म अपने चरित्रों और उनके संघर्षों को व्यक्त करती है। निश्चित रूप से कुछ पात्र सभी धारावाहिकों में दिखते हैं लेकिन उनकी कहानी एक-दूसरे से बिल्कुल अलग है। निर्देशक समलैंगिक व्यक्ति के उस टूटन और पीड़ाजनक स्थिति को अभिव्यक्त करने में सफल होते है जो अमूमन उक्त विषय पर बनी फिल्मों से गायब रहती है।

बोल (2011) : शोयब मंसूर

2011 में बनी फिल्म 'बोल' समाज के पितृसतात्मक ढांचे और उसके सच को व्यक्त करती है। पितृसत्ता के उस कड़वे सच को व्यक्त करती है जिसने जेंडर को आधार बनाकर अपने सत्य और सत्ता दोनों को बचाये रखने की पुरजोर कोशिश की। फिल्म उस पुरुषवादी मानसिकता पर चोट है जिसने स्त्रियों का गला घोंटा और उन्हें वस्तु समझकर घर के किसी कोने में ढ़केल दिया। जो सिर्फ भोग की वस्तु बनाकर छोड़ दी गयी। 'बोल' एक ऐसी फिल्म है जिसने तथाकथित सेकंड जेंडर और हमारे समाज के ही वे लोग जो अपनी भिन्न पहचान के कारण थर्ड जेंडर कहलाये उनकी स्थिति को समाज, परिवार और पितृसत्तात्मक सोच में बसे मानसिकता को, क्रूरता को, हैवानियत को व्यक्त की है।

Source: https://www.google.com/imgres?imgurl=https%3A%2F%2Ffeminisminindia.com%2Fwp-content%2Fuploads%2F2017%2F05%2F60825962-585x405.jpg&imgrefurl=https%3A%2F%2Ffeminisminindia.com%2F2017%2F05%2F26%2Ffeminist-reading-bol%2F&tbnid=2cX4AqJscw7xpM&vet=12ahUKEwiS1OGJ-sH0AhU9nUsFHV1MB0EQMygAegQIARBO..i&docid=ZZXCeoUTPTkexM&w=585&h=405&q=bol%20movie%20saifi&hl=en&ved=2ahUKEwiS1OGJ-sH0AhU9nUsFHV1MB0EQMygAegQIARBO

शोयब मंसूर के निर्देशन में बनी फिल्म लाहौर के एक मध्य वर्गीय परिवार की कहानी है। निर्देशक ने 'बोल' के मध्यम से गरीबी, पितृसतात्मक रवैया, जेंडर पूर्वाग्रह, रूढ़िवाद, महिलाओं के प्रति भेदभाव, थर्ड जेंडर के प्रति परिवार और समाज का घिनौना रूप जैसे कई अहम प्रश्नों को एक साथ उठाया है। फिल्म के केन्द्रीय चरित्र के रूप में जैनब (हुमैमा मल्लिक) उभरकर सामने आती है। परिवार में जन्मी सात बेटियों में जैनब सबसे बड़ी बेटी है। जैनब अपने पिता हकीम सैयद (मंजर सेहबाई) के हर उस रवैये, उस ढर्रे पर सवाल उठाती है जिसने उन्हें (स्त्रियों और अपने भाई के रूप में जन्में सैफी (किन्नर) को) चारदीवारी में बंद कर अपनी जरूरत के अनुसार वस्तु के रूप में उनका इस्तेमाल किया।

पुरुष उत्तराधिकार के लिए बेटे की चाहत ने हकीम सैयद को इतना घिनौना और असंवेदनशील बना दिया कि वह सही-गलत का फर्क ही भुला बैठा। उसके घर में सात बेटियों के जन्म के बाद आठवे बच्चे के रूप में सैफी का जन्म हुआ। सैफी का जन्म एक किन्नर के रूप में हुआ। जैसे ही पिता हकीम सैयद को पता चलता है कि उसके घर में बेटे ने नहीं बल्कि एक किन्नर ने जन्म लिया है तो वह अपना होश खो बैठता है। वह यह भी भूल जाता है कि वह उसी का अपना बेटा है। अपनी झूठी मान-मर्यादा, इज्जत के खातिर उस नन्हे बच्चे को अपने ही घर में कैद कर देता है और मौका पाते ही सैफी (जो अब बड़ा हो चुका है) का गला घोंट उसे मार देता है। अतः फिल्म के मध्यम से शोयब मंसूर ने जेंडर भेदभाव के प्रश्न को प्रमुखता से उठाया है।

मार्गेरिटा विथ अ स्ट्रा (2014) : सोनाली बोस

'मार्गेरिटा विथ अ स्ट्रा' (2014) सोनाली बोस के निर्देशन में बनी है। 'मार्गेरिटा विथ अ स्ट्रा' लैला की कहानी है। लैला को संगीत और परिवार से बहुत लगाव है। वह दिल्ली विश्वविद्यालय में संगीत की पढ़ाई करती है लेकिन सेरेब्रल पाल्सी (Cerebral Palsy) से पीड़ित है। "सेरेब्रल पाल्सी (सीपी) एक तरह के विकारों का एक समूह है जो शरीर के किसी भी अंग और मांसपेशियो या गतिविधि को प्रभावित करता है"[22]।

Source:

https://www.google.com/imgres?imgurl=https%3A%2F%2Fimg.etimg.com%2Fphoto%2Fmsid-46954116%2Cquality-100%2F.jpg&imgrefurl=https%3A%2F%2Feconomictimes.indiatimes.com%2Fmagazines%2Fpanache%2Fmovie-review-margarita-with-a-straw-is-a-moving-tale-of-a-special-life%2Farticleshow%2F46949543.cms&tbnid=w-lzgybvroM5BM&vet=12ahUKEwjfv_eP-8H0AhXCMisKHUmYCWYQMygTegUIARDbAQ..i&docid=M-tMPJD-

Ta6jhM&w=400&h=623&itg=1&q=margerita%20with%20astarw%20movie%20images&hl=en&ved=2ahUKEwjfv_eP-8H0AhXCMisKHUmYCWYQMygTegUIARDbAQ

लैला (काल्की कोचलीन) का अपनी मां शुभांगी (रेवाथी) से गहरा लगाव है। और शुभांगी भी हर परिस्थिति में लैला का साथ और सहयोग देती है। सोनाली बोस ने बड़ी बारीकियों के साथ फिल्म का निर्देशन किया है। बड़ी ही सूक्ष्मता से इन्होंने लैला की शारीरिक चुनौतियों के साथ-साथ उसकी उन छोटी-छोटी मनः-स्थितियों और आकांक्षाओं को पकड़ा है जो ऐसे बच्चों में निहित होता है। जिसे अक्सर हम समझ नहीं पाते। लैला के जीवन में एक नया मोड़ तब आता है जब उसे निमा (Tenzing Dalha) नाम के अपने कॉलेज के दोस्त से प्यार हो जाता है। लेकिन जब लैला को पता चलता है कि उसकी बीमारी के कारण वह उसे प्यार नहीं करता तो वह बहुत दुखी होती है और दिल्ली विश्वविद्यालय छोड़ अपनी मां के साथ न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय से अपनी संगीत की पढ़ाई पूरी करने के लिए निकल पड़ती है। यहां उसकी मुलाकात खानुम (सायनी गुप्ता) से होती है। खानुम दृष्टिबाधित लेस्बियन है। लैला और खानुम अक्सर एक-दूसरे से मिलते-जुलते रहते है। धीरे-धीरे दोनों घनिष्ट मित्र बन जाते हैं। इनके बीच यौनिक संबंध स्थापित होता है। लैला को धीरे-धीरे यह एहसास होता है कि वह बाईसेक्सुअल है। वह अपनी पार्टनर खानुम (सायनी गुप्ता) और अपनी मां को भी अपनी बाईसेक्सुअलिटी के बारे में बताती है। लेकिन जैसा की अमूमन भिन्न यौनिकता वाले लोगों के साथ होता है वही लैला के साथ भी हुआ। वह अंत में अकेले रह गई। लैला की मां भी उसे छोड़कर कैंसर के कारण हमेशा-हमेशा के लिए उससे दूर हो गई और खानुम को लैला की बाईसेक्सुअलिटी स्वीकार नहीं थी इसीलिए वह भी उसे छोड़कर चली गई।

कपूर एंड संस (2016) : शकुन बत्रा

'कपूर एंड संस' एक संयुक्त परिवार की कहानी है। अमरजीत कपूर (ऋषि कपूर) घर के मुखिया (दादू) है। उनका बड़ा बेटा हर्ष कपूर (रजत कपूर) और छोटा बेटा शशी कपूर (विक्रम कपाड़िया) है। हर्ष कपूर की पत्नी सुनीता (रत्ना पाठक शाह) है। इन दोनों के दो बेटे हैं। बड़ा बेटा राहुल (फवाद खान) और छोटा बेटा अर्जुन (सिद्धार्थ कपूर) है। राहुल घर का लाड़ला है। मुख्य रूप से हर्ष और सुनीता के जिगर का टुकड़ा है। राहुल बेहद संवेदनशील और बहुत ही भावुक लड़का है। राहुल पर हर्ष और सुनीता को बेहद गर्व है पर जैसे ही राहुल की मां सुनीता को उसकी समलैंगिकता का पता चलता है वह टूट जाती है। वह राहुल से नाराज हो जाती है और उसे स्वीकार नहीं कर पाती है। कहानी के अंत में जरूर वह अपने बच्चे और उसकी यौनिकता को स्वीकार कर लेती है।

निर्देशक शकुन बत्रा ने राहुल के 'गे' होने को बहुत दबे और छिपे स्वर में दिखाने की कोशिश की है। फिल्म के लगभग अंत में राहुल के 'गे' होने का संकेत मिलता है। तब जब सुनीता राहुल के लैपटॉप में राहुल और उसके दोस्त (पुरुष साथी) को एक साथ देखती है। फिल्म में ना तो समलैंगिक शब्द का कहीं प्रयोग हुआ है ना ही इस पर खुलकर कोई चर्चा। स्वयं राहुल भी फिल्म के अंत में अपने भाई अर्जुन से अपने अलग होने और अलग पहचान की बात बताता है। बचपन से उसने अपनी समलैंगिकता की सच्चाई अपने पूरे परिवार से छिपाकर रखी क्योंकि वह जानता था कि उसके समलैंगिक होने को उसके घर वाले स्वीकार नहीं करेंगे। वह कहता है -"एक झूठ है जो मैं सारी जिंदगी तुम सब से बोलता आया हूँ। मेरी लंदन में कोई गर्लफ्रेंड नहीं है। और टिया या गीत, या कोई भी लड़की से फर्क नहीं पड़ता। किसी भी लड़की में मुझे कोई इंटरेस्ट नहीं था। और ना ही कभी होगा। मेरी पूरी जिंदगी सिर्फ झूठ पर चल रही थी और मुझे नहीं लगता कि कोई भी घर पर इस बात को एक्सेप्ट करेगा"[23]।

फिल्म में कहीं भी 'गे' या 'समलैंगिक' शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। जिससे समाज की होमोफोबिक प्रवृति तो दिखती ही है साथ ही वह चुप्पी भी दृष्टिगोचर होती है जिसे समाज साधे रहना चाहता है।

अलीगढ़ (2016) : हंसल मेहता

2016 में बनी फिल्म 'अलीगढ़' एक सच्ची घटना पर आधारित है। हंसल मेहता के निर्देशन में बनी यह फिल्म प्रोफेसर श्रीनिवास रामचन्द्र सिरास के जीवन से संबंधित है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रामचन्द्र सिरास को उनकी समलैंगिकता के कारण अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा था[24]। फिल्म में उनके साथ घटी इसी घटना को आधार बनाया गया है।

Source: https://encrypted-tbn0.gstatic.com/images?q=tbn:ANd9GcTilO4pwg2eiNzCS0afC0OLEfaKz9bkeYO5sA&usqp=CAU

मराठी विभाग के प्रोफेसर सिरास की भूमिका फिल्म में मनोज वाजपेयी ने निभाई है। प्रोफेसर सिरास को उनके दोस्त (रिक्शा चालक) के साथ आलिंगन करते हुए उनके कुछ साथी प्रोफेसरों द्वारा स्टिंग ऑपरेशन के जरिये पकड़ उनपर समलैंगिकता का आरोप लगाकर न केवल प्रोफेसर और अध्यक्षीय पद से बर्खास्त किया जाता है बल्कि अपमानित भी किया जाता है। अनैतिकता के नाम पर तमाम आरोप गढ़कर

विश्वविद्यालय परिसर से बाहर कर दिया जाता है। बाहर आकार भी उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें रहने और खाने तक के लिए जद्दोजहद करना पड़ता है। प्रोफेसर सिरास विश्वविद्यालय के फैसले को चुनौती देते हुए अदालत की मदद लेते है। किन्तु इस दौरान वह विश्वविद्यालय और समाज के रवैये को देख उदासीन होते चले जाते है और अचानक एक दिन उनकी मृत्यु हो जाती है।

प्रोफेसर सिरास के साथी प्रोफेसर श्रीधरण से जर्नलिस्ट दिपु (राजकुमार राव) द्वारा प्रोफेसर सिरास के बारे में पूछे जाने पर यह कहना कि "मत पूछो वरना उन्हें समाज में जगह नहीं मिलेगी"[25] समाज के (समलैंगिकता के प्रति) भय और घृणा को दर्शाती है। हंसल मेहता ने प्रोफेसर सिरास की कहानी को आधार बनाकर फिल्म के माध्यम से बेहद संवेदनशील पहलू को उभारने की कोशिश की है। समलैंगिक व्यक्ति के आत्मीय संघर्ष और पीड़ा की अभिव्यक्ति के साथ-साथ समाज का समलैंगिकता के प्रति कटु व्यवहार भी दृष्टिगोचर होता है।

डिअर डैड (2016) : तनुज भ्रमर

'डिअर डैड' एक पिता और उसके बेटे की कहानी है। फिल्म 'डिअर डैड' 2016 में तनुज भ्रमर के निर्देशन में बनी। फिल्म में 'समलैंगिक' प्रसंग को उठाया गया है। फिल्म का केन्द्रीय चरित्र नितिन विवाहित था। उसके दो बच्चे थे। शिवम और विधि। नितिन की पत्नी नुपूर स्वामीनाथन (इकवाली खन्ना) नितिन के समलैंगिकता के बारे में जानती थी। लेकिन परिवार का अन्य कोई भी सदस्य यह नहीं जानता था कि नितिन समलैंगिक है। इसीलिए शादी के कई वर्षों बाद नितिन हिम्मत जुटाता है और फैसला करता है कि अपने 'गे' होने की बात बेटे शिवम (हिमांशु शर्मा) को बताएगा।

शिवम बोर्डिंग स्कूल में पढ़ता है। वह छुट्टियों में घर आया हुआ था। छुट्टियाँ खत्म होती है और शिवम को बोर्डिंग स्कूल पहुंचाने नितिन उसके साथ जाता है। फिल्म की पूरी कहानी नितिन और उसके बेटे शिवम के बीच यात्रा के दौरान होने वाली बातचीत पर बनी है। इसी यात्रा के दरमियान नितिन अपने बेटे के

साथ अपनी मां के घर भी जाता है जहां वह अपने पिता (बीमारी के कारण बोलने में असमर्थ) को सबसे पहले अपने पहचान अर्थात 'गे' होने की सच्चाई को बताता है। और तभी शिवम भी पिता नितिन की बात सुन लेता है और क्रोधित हो उठता है।

Source: https://encrypted-tbn0.gstatic.com/images?q=tbn:ANd9GcQURefees-lQqfe5yXz4iUJ7I1-ej1E2bNgcw&usqp=CAU

वह अपने बेटे को बताता है कि "यह उसके लिए भी बहुत आसान नहीं रहा। काफी समय लगा उसे यह समझने में कि वह 'गे' है। उसने बहुत कोशिश की लड़कियों के प्रति आकर्षित होने की"[26]। उसने शादी तक की लेकिन कुछ नहीं बदला। वह चाहकर भी अपनी पसंद अपनी यौनिकता को बदल न सका। लोगों के नजर में उसका एक खुशहाल परिवार। लेकिन वह अपनी पहचान को लेकर अंदर ही अंदर घुटता रहा, तड़पता रहा।

यात्रा के दौरान नितिन की मुलाकात आदित्य तनेजा (अजनबी) से होती है। नितिन और आदित्य के बीच हुई बातचीत के मध्यम से समलैंगिकता (गे) से जुड़े कई पक्ष उभरकर सामने आये। आदित्य तनेजा को जब पता चलता है कि नितिन 'गे' है तो वह डर जाता है। उसे डरा हुआ देख नितिन उससे कहता है कि

"अगर एक लड़की तुमसे कहे कि वो तुम्हें पसंद करती है तो तुम क्या करोगे ? अगर पसंद नहीं है तो मना करोगे न ? है न? ऐसे तो नहीं डरोगे ? इसमें डरने की क्या बात है ?"[27]।

फिल्म का अंत सकारात्मक पक्ष के साथ खत्म होता है। जहां शिवम अपने पिता और उनकी समलैंगिकता को पूरी तरह स्वीकार कर लेता है। अतः तनुज भ्रमर फिल्म के मध्यम से समलैंगिकता को संवेदनशीलता, बेबाकी और बड़ी साफगोई के साथ प्रस्तुत करने में सफल हुए है।

एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा (2019) : शेली चोपड़ा धर

शेली चोपड़ा धर के निर्देशन में बनी फिल्म 'एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा' (2019) समलैंगिकता पर आधारित है। फिल्म की केन्द्रीय पात्र स्वीटी चौधरी(सोनम कपूर), बलबीर चौधरी(अनिल कपूर) की बेटी है। स्वीटी की मुलाकात साहिल मिर्जा (राजकुमार राव) नामक एक स्क्रिप्ट राईटर से होती है। थिएटर में हुई पहली मुलाकात में ही साहिल को स्वीटी से प्यार हो जाता है। और साहिल जब स्वीटी से अपने प्यार का इजहार करने आता है तो स्वीटी कहती है कि "सबका दिमाग एक ही डायरेक्शन में क्यों चलता है ? ये जरूरी है कि मुझे सिर्फ एक मुंडे से ही प्यार हो ? मैं एक लड़की से प्यार करती हूँ"[28]।

स्वीटी का सेक्सुअल ओरीएन्टेशन बचपन से भिन्न था। स्वीटी, गुरमिन्दर (लड़की साथी) को बहुत चाहती थी। पर स्वीटी को जब पता चला कि गुरमिन्दर उससे अलग है और स्वीटी सिर्फ उसके लिए एक दोस्त है, तो वह बेहद निराश हो जाती है। अपने सहपाठियों के साथ-साथ स्वीटी भी समझने लगती है कि वह अलग है। कक्षा के अन्य सहपाठी उससे अलग रहना शुरू कर देते हैं।

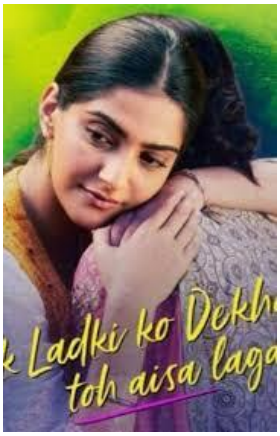

Source: https://encrypted-tbn0.gstatic.com/images?q=tbn:ANd9GcTWgdQ6qNIwO4QF5_jx-JNxXppvmVX1G3l_IQ&usqp=CAU

स्वीटी बचपन से जानती थी कि वो इस समाज में फिट नहीं बैठती है। उसके ही जैसे भिन्न यौनिकता वाले लोगों के साथ अमानवीय व्यवहार को देखते हुए उसने तय किया कि वह अपनी पसंद को कभी किसी के सामने नहीं आने देगी। और इस तरह स्वीटी ने बचपन से डायरी को अपना साथी चुन लिया। अपनी डायरी में हर वह बात लिखती जिसे वह कभी किसी से कह नहीं पाती। उसके पास ऐसा कोई नहीं था जिससे वह अपने मन की बात कह पाती। समाज के रवैये को देखकर स्वयं को समझाती है कि उसे कभी किसी का प्यार नहीं मिलेगा। उसे जीवन भर अकेला रहना होगा। वह बिल्कुल निराश और अकेली हो जाती है। लेकिन उसके जीवन में दुबारा खुशी तब दस्तक देती है जब वह कुहु (रागिना कैसेन्ड्रा) से मिलती है। किन्तु जैसे ही स्वीटी के भाई बबलू विरजी (अभिषेक दुहान) को पता चलता है तो वह उसे डाटता-फटकारता है, समाज, मान-मर्यादा का दबाव बनाकर उसपर बीमारी (समलैंगिकता) का आरोप लगाता है।

कहानी के अंत में जब बबलू अपने पिता बलबीर चौधरी से कहता है कि "डैडी जी आपको इसकी बीमारी दिखाई नहीं देती ? 14 साल की थी तब से जानता हूँ मैं, मैंने बहुत कोशिश की कि नॉर्मल हो जाये ये, पर फेल हो गया मैं"[29]। तो स्वीटी कहती है "किसके लिए नॉर्मल बबलु विर जी ? आप मुझे अपने हिसाब से नॉर्मल करना चाहते है। पर मेरे लिए ये ही नॉर्मल है"[30]।

शेली चोपड़ा धर ने समलैंगिकता जैसे संवेदनशील मुद्दे को बड़ी ही संवेदनशीलता के साथ दिखाया है। उस यथार्थ और संघर्ष को दिखाने का प्रयास किया है जिसे समलैंगिक होने के कारण हर व्यक्ति को भोगना पड़ता है। फिल्म के अंत में बलबीर चौधरी का यह कथन - " 'साहिल बेटे अगर तेरी शादी जबरदस्ती किसी मुंडे के साथ करवाई जाये तो तू कर लेगा ?'

साहिल कहता है - 'बिल्कुल नहीं'।

तो बलबीर कहता है - 'क्योंकि कुदरत ने जन्म से तुझे वैसा ही बनाया है। यही हिसाब-किताब इनका (स्वीटी और कुहु) है। ये जन्म से ऐसी ही है। इसमें इंडियन या वेस्टर्न जैसी कोई बात नहीं है। इन्हें मारके, घर में बंद करके बदल नहीं सकते। ये कोई बीमारी नहीं है। जिसके लिए किसी दवाई की जरूरत पड़े। ये तो बस प्यार है। प्यार करने में गलत क्या है ? क्या गुनाह है ? स्वीटी पुत्तर तेरी खुशी के लिए सारी दुनिया कुर्बान। तुझे लंदन भागने की जरूरत नहीं है। तू जैसे जीना चाहती है वैसे जी"[31] इस बात की पुष्टि करता है कि यदि परिवार वाले अपने भिन्न जेन्डर या यौनिकता वाले बच्चे को अपना लेते हैं तो समाज भी धीरे-धीरे उन्हें स्वीकार कर लेता है।

मिस मैन (2019) : तथागत घोष

तथागत घोष द्वारा निर्देशित लघु फिल्म 'मिस मैन' एक ट्रांसस्त्री की कहानी है। सेक्स रिअसाइमेंट सर्जरी की मदद से अपनी पहचान को पाने की कहानी है। पुरुष तन में फंसे स्त्री मन की। फिल्म के केन्द्रीय पात्र का नाम

मानव (अर्घ्य अधिकारी) है। सजना-संवरना और साड़ी मानो 'मानव' को अपनी ओर खींचता है। सोते-जागते वह स्वयं को केवल स्त्री रूप में ही देखता है।

फिल्म की शुरुआत में मानव का पार्टनर उससे कहता है -

" 'तुम्हारे पिता तुम्हें कभी स्वीकार नहीं करेंगे'

इसके प्रतिउत्तर में मानव प्रश्न करता है - 'और तुम'

तो उसका पार्टनर कहता है -'साड़ी पहन लेने से कोई स्त्री नहीं बन जाता'

तो मानव कहता है -'तुम मुझे प्यार करते हो या एक स्त्री को'

पार्टनर कहता है -'मैं एक लड़के के साथ नहीं रह सकता, मेरे शरीर को एक स्त्री शरीर की जरुरत है"[32]

यह दर्शाता है कि स्त्री या पुरुष होने के लिए (व्यवहार करने के लिए) शारीरिक अंगों का स्त्री या पुरुष जैसा होना कितना जरूरी है। फिल्म उस जेंडरनुमा जकड़न को दर्शाता है जिससे समाज और व्यक्ति प्रभावित है। फिल्म का वृतांत बेहद संवेदनात्मक है। फिल्म का हर वाक्य समाज के सामने एक प्रश्न उठाता है। फिल्म का संगीत, लोगों का हँसता चेहरा आदि बहुत कुछ बयां करते हैं। ऐसा लगता है जैसे फिल्म के चरित्र ही नहीं बल्कि पूरी की पूरी फिल्म मानव की कहानी और उसके संघर्ष को बयां करने की कोशिश करती है। जिसे तथागत घोष ने तमाम बारीकियों को ध्यान में रखकर निर्देशित किया है। वे ट्रांसस्त्री के संघर्ष की कहानी तो दिखाते ही है साथ ही जेंडर के साथ यौनिकता किस हद तक जुड़ा हुआ है और कैसे दोनों के तालमेल को परिवार व समाज तवज्जु देता है, की सोच को पेश करते हैं।

अपने पार्टनर की चाहत को पूरा करने के लिए मानव अपने गाँव से निकर कोलकाता जा पहुँचता है जहां उसकी मुलाकात झिमली नाम की एक स्त्री (वैश्या) से होती है। बातचीत के दौरान जब झिमली कहती है -

"स्त्री होवार जंतना अनेक'

तो मानव पूछता है - 'क्या स्त्री होना अच्छा नहीं लगता'

और झिमली कहती है –'एक स्त्री का शरीर उसका अपना नहीं होता'

तो मानव कहता है '-क्या सिर्फ शरीर से ही स्त्री हुआ जा सकता है? मन से भी तो स्त्री हुआ जा सकता है'

झिमली कहती है 'मन से स्त्री होने से पेट नहीं भर सकता"[33]।

Source: https://encrypted-tbn0.gstatic.com/images?q=tbn:ANd9GcQbTYTciYpMk4eIpr9bUofp3PYXGJXjPgEj1Q&usqp=CAU

दोनों के बीच के संवाद को सुनकर समझा जा सकता है कि झिमली स्त्री शरीर के कारण तमाम तरह की यातनाओं को सहती है और मानव मन से स्त्री किन्तु शरीर से पुरुष होने के कारण उपेक्षित होता है। तथा इस

मन और शरीर के बीच के अंतर के कारण पिता के साथ-साथ प्रेमी के उपेक्षा का शिकार भी होता है। मानव अपने गाँव लौटकर अपने प्रेमी को बताता है कि वह कभी-कभी स्त्री के प्रति भी आकर्षण महसूस करता है। यह सुनकर उसका पार्टनर उसपर हँसता है और वहां से चला जाता है।

झिमली का मानव को कहना कि "चाहे कुछ भी हो जाए किसी हिजड़े के साथ घर नहीं बसा सकती' मानव के सामने एक प्रश्न खड़ा कर जाता है कि -'हम जो है, जैसे है, क्या वैसे नहीं रह सकते?"[34]

कहानी के अंत में मानव के पिता उसका रिश्ता 'बीथी' नाम की लड़की से तय कर देते है। चिंतित मानव साड़ी पहनकर अपने पिता, बीथी तथा उसके भाई के सामने आता है। वे सब उसे देख चकित रह जाते है। अंत में झिमली का मानव को फ़ोन आता है और वह बताती है कि मानव पिता बनने वाला है। कहानी का अंत बेहद संवेदनशील रूप में होता है।

मानव मन से स्त्री किन्तु शरीर से स्त्री न होने के कारण अपने पार्टनर द्वारा तिरस्कृत होता है और शरीर से पुरुष किन्तु मन से पुरुष न होने के कारण झिमली द्वारा भी उपेक्षित होता है। शरीर और मन के इस बेमेलपन के कारण पिता द्वारा शोषण का शिकार तो वह पहले से ही होता रहा है। निष्कर्षतः देखा जाए तो वह अपने जीवन में बेहद अकेला है जिसके दर्द को, मन और तन की इस भिन्नता को कोई नहीं समझ पाता।

शुभ मंगल ज्यादा सावधान (2020) : हितेश केवल्य

'शुभ मंगल ज्यादा सावधान' (2020) हितेश केवल्य के निर्देशन में विषमलैंगिक परिवेश में बनी समलैंगिक जोड़ों की कहानी है। कार्तिक (आयुष्मान खुराना) और अमन (जितेंद्र कुमार) एक-दूसरे से प्रेम करते है। कार्तिक और अमन को एक-दूसरे के साथ देख अमन के पिता शंकर त्रिपाठी का अचंभित होना समाज के रवैये को अभिव्यक्त करता है। समलैंगिकता संवेदनशील विषय है। ऐसा विषय जो भावनात्मकता से जुड़ा

है। किन्तु विडंबना यह है कि समाज में इसे स्वीकार करना तो दूर की बात है इसके प्रति घृणात्मक, हास्यास्पद रवैया इख्तयार किया जाता है। ऐसे समाज में समलैंगिक होना सबसे बड़ा गुनाह बन जाता है। कार्तिक, अमन के पिता शंकर त्रिपाठी(गजराज राव) से कहता है कि "नहीं लड़ना चाहता मैं, आपको शायद पता नहीं होगा, हम रोज लड़ाइयाँ लड़ते हैं जिंदगी में लेकिन जो लड़ाई परिवार के साथ होती है वो लड़ाई सबसे बड़ी और खतरनाक होती है"[35]।

एक तरफ फिल्म समलैंगिक संघर्ष को कुछ हद तक ही सही उजागर करता है तो दूसरी तरफ अमन के चाचा चमन त्रपाठी (मनु ऋषि चड्ढा) का कार्तिक से पूछना कि "एक बात बताओ बेटा, तुमने कब डिसाइड किया की ये बनोगे?"[36] विषमलैंगिक समाज में समलैंगिकता के प्रति बसे पूर्वाग्रह को व्यक्त करता है। उस आधे-अधूरे ज्ञान को व्यक्त करता है जो समलैंगिकता को चुनाव या पाश्चात्य से प्रभावित समझते है।

Source: https://www.google.com/imgres?imgurl=https%3A%2F%2Fakm-img-a-in.tosshub.com%2Findiatoday%2Fimages%2Fstory%2F202002%2Fshubh-ayush.jpeg%3FwtYfCLdSUtmDBNmfamemjZyOCpf7vBi.%26size%3D770%3A433&imgrefurl=https%3A%2F%2Fwww.indiatoday.in%2Fmovies%2Fbollywood%2Fstory%2Fshubh-mangal-zyada-saavdhan-box-office-collection-day-3-1649349-2020-02-24&tbnid=azLmSepxkWP3aM&vet=12ahUKEwi9zMLEgsL0AhXRsksFHfNBBz8QMygLegUIARDDAQ..i&docid=QMo0_IiMqFNV6M&w=770&h=433&itg=1&q=shubh%20mangal%20jyada%20saawdhan%20%20movie%20images&hl=en&ved=2ahUKEwi9zMLEgsL0AhXRsksFHfNBBz8QMygLegUIARDDAQ

फिल्म ने समाज के द्विधारी व्यवस्था, इस व्यवस्था को चलाने वाले उस सत्ता पर प्रश्नचिन्ह लगाता है जिनकी व्याप्ति धर्म, संस्कृति, संगठन, पाठ्य-पुस्तकों तक में है। ये कविता जिसे हम सब ने अपने पाठ्य-पुस्तकों में पढ़ी है -

'Jack and Jill went up the hill

To fetch a pail of water

Jack fell down and broke his crown

Jill came tumbling after'

स्टेशन पर एक छोटे बच्चे द्वारा इस कविता को बोलता देख कार्तिक कहता है कि "क्यों जैक और जिल ही हमेशा पहाड़ के पीछे भागते है ? जैक और जौनी क्यों नहीं जा सकते ?"[37] समाज से एक बड़ा और महत्वपूर्ण प्रश्न है।

अमन के घर वालों को जब पता चलता है कि उनका बेटा 'गे' है तो उसकी मां सुनैना (नीना गुप्ता) उससे कहती है -"बेटा हम तेरा इलाज कराएंगे। मेडिकक साइंस ने तरक्की कर ली है। तू ठीक हो जाएगा बेटा"[38]। यह दर्शाता है कि समाज अब भी समलैंगिकता को बीमारी समझता है। जब कि विज्ञान ने स्पष्ट कर दिया है कि यह कोई बीमारी नहीं है। कार्तिक कहता भी है -"जो प्यार इनके (समाज के) दिमाग में फिट नहीं बैठता उसे दबा देते है"[39]।

हितेश केवल्य ने फिल्म में समलैंगिकता जैसे गंभीर मुद्दे को अगंभीरता से उठाया है। अतः 'सुभ मंगल ज्यादा सावधान' विषमलैंगिक संरचना पर आधारित फिल्म है। फिल्म का वातावरण, अन्य चरित्र तथा तमाम स्थितियों की बनावट-बुनावट विषमलैंगिक दुनिया से जुड़ी हुई है जहां सिर्फ विषमलैंगिक जोड़े के स्थान पर समलैंगिक जोड़े को रच दिया गया है। समलैंगिक मूल्यों और समलैंगिक संघर्ष को दिखाये

बगैर महज चरित्रों को गढ़ देने भर से कोई फिल्म समलैंगिक नहीं हो जाती। लेकिन फिल्म का अंत सकारात्मक तरीके से दिखाया गया है। कार्तिक और अमन के रिश्ते को परिवार वाले स्वीकार कर लेते हैं-

"सुनैना कहती है- 'ये बेटा है जो चाहता है कि एक दिन में हम इसके हिसाब से अपने -आप को बदल डाले'

चमन त्रिपाठी कहता है-'अगर दो बालिक लड़के एक-दूसरे का हठ पकड़ते है या अपने घर के कमरे के अंदर वो कुछ भी करते है तो इसमें मुझे, आपको या किसी को भी कोई ऐतराज नहीं होना चाहिए"[40]।

सिनेमा ने समलैंगिकता को विषयवस्तु के रूप में स्थान तो दिया लेकिन एक अलग-थलग पहचान के रूप में चित्रित किया। इंडियन साइकाइट्रिक सोसाइटी के अनुसार समलैंगिकता कोई बीमारी नहीं है। वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाईजेशन (WHO) घोषणा कर चुकी है कि ट्रांस-यौनिकता किसी प्रकार का मानसिक विकार नहीं है। अब भी समाज इन अस्मिताओं को स्वीकार करता नहीं दिख रहा है। ऐसे में फिल्में इन विषयों के मिथकों की पुनर्व्याख्या द्वारा समाज का दृष्टिकोण बदलती है। प्रारंभ में सिनेमा में ऐसे विषयों को हास्यास्पद रूप में दिखाया गया। वैसे अब भी इन विषयों को लेकर सिनेमा सकारात्मक हो गया है ऐसा नहीं है। लेकिन फिर भी कुछ फिल्मों ने इनसे जुड़े मिथकों को तोड़ने का प्रयास किया है। महज सहानुभूति के नाम पर समलैंगिक जोड़े को दिखा देना पर्याप्त नहीं बल्कि उनके संघर्ष, उनकी कठिनाईयों, उनके विरोध के कारण, उनकी सफलता को भी दिखाना आवश्यक है।

एलजीबीटीक्यू फिल्मों में चित्रण कई बार त्रुटिपूर्ण तो कई बार रुढ़िवादी रूप में दिखाया जाता है। ऐसी फिल्मों को देखकर अधिकांश दर्शक क्वीयर पीड़ा तथा संघर्ष के अनुभूति से वंचित रह जाते हैं। जिसके कारण दर्शक इन पात्रों के संघर्ष तथा दर्द से एकात्म स्थापित नहीं कर पाते हैं। 'माई ब्रदर निखिल' फिल्म के निर्माता ओनीर के अनुसार 'अब तक हमें फिल्मों में सही ढंग से नहीं दिखाया गया है। एलजीबीटीक्यूजन आवाज़ों को सशक्त बनाने पर किसी तरह का कोई बल नहीं दिया गया है। वास्तव में यह वे लोग है जो

हमारी दुनिया का हिस्सा नहीं हैं। क्या वे हमारी कहानी हमसे बेहतर बता सकते है? ऐसे कई फिल्म निर्माता है जिन्होंने ऐसे विषयों पर अत्यंत आक्रामक फिल्में बनाई हैं, परन्तु कभी भी इसके प्रति खेद नहीं जताया है। वे सिर्फ ये कहकर निकल जाते है कि 'ये तो बस मनोरंजन के लिए था जिसे बहुत से लोगों ने पसंद किया हैं। इसके द्वारा उन्हें 'गे' शब्द के अर्थ को समझने का अवसर मिला है'। ..... माफी चाहूँगा लेकिन मैं नहीं चाहता कि लोग मेरी पहचान को उस तरह समझे जिस तरह आप उन्हें दिखा रहे है। मेरा जीवन यहां हंसी-मजाक के लिए नहीं है'।

फिल्म एवं टेलीविज़न में क्वीयरजन से जुड़े वास्तविक आख्यान अब भी बहुत सीमित है। विषय की संवेदनशीलता और पाठकों को विषय से जोड़ने के लिए क्वीयर चरित्रों के प्रतिनिधित्व के लिए क्वीयर पात्रों को अवसर दिया जाना चाहिए। हॉलीवुड अभिनेत्री हैली बेरी के अनुसार 'ट्रांसजेंडर समुदाय को निश्चित रूप से अपनी कहानियों को व्यक्त करने का अवसर मिलना चाहिए'। बॉलीवुड में अधिकतर फिल्मों ने एलजीबीटी लोगों से जुड़े जीवन चित्रण और उनके संघर्ष को अत्यंत सतही तौर पर चित्रित किया है। पुरुषों की तरह दिखने वाली लेस्बियन स्त्री, क्रॉस-ड्रेसर तथा स्त्रियोचित पुरुष आदि चरित्र सम्पूर्ण एलजीबीटीक्यूजन का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। कुछ चरित्रों को तो बेहद हास्यास्पद तरीके से दिखाया जाता हैं।

'लेस्बियन' या 'गे' कपल्स में किसी एक को स्त्री और दूसरे को पुरुष मानना/ दिखाना या समझना संबंधों के प्रति अपनों रूढ़ सांस्कृतिक समझ का परिणाम होता है। दो पार्टनरों में से किसी एक के पुरुष दूसरे के स्त्री, इसके विपरीत या एक के ट्रांससेक्सुअल होने या इनमें से कुछ भी ना होने की पूरी संभावना हो सकती है। किन्तु बने-बनाये फ्रेम में ऐसे संबंधों को फिट करने का आशय सामाजिक माइन्ड सेट से है। GLAAD[41] के अनुसार 2017 में प्रसारित प्रमुख फिल्मों के 12.8 प्रतिशत भाग ने एल. जी. बी. टी. क्यू

किरदारों को दिखाया है। जिन कुछ ने दिखाया उसमें 64 प्रतिशत ने समलैंगिक पुरुषों को, 36 प्रतिशत ने समलैंगिक स्त्रियों को तथा 14 प्रतिशत ने बाईसेक्सुअल स्त्री या पुरुष को दिखाने का प्रयास किया हैं।

भारतीय संदर्भ में मौजूद देवगाथाएं, लोककथाएं, पेंटिंग तथा शिल्पकलाएं इस तथ्य को प्रमाणित करते है कि पूर्व-उपनिवेशिक भारत में बाइनरी सेक्सुअलिटी के बाहर रुझान रखने वालों के प्रति भेदभावपूर्ण रवैया नहीं अपनाया गया था। "जिसे आज समलैंगिकता कहा जाता है उसका अस्तित्व हमेशा से यहूदी, ईसाई तथा अन्य संस्कृतियों में एक शक्तिशाली उपसंस्कृति के रूप में मौजूद रहा है"[42]। ये उस दौर के सच है जिन्हें कोने में ढकेल दिया गया। एलजीबीटीक्यू विमर्श ने ऐसी पहचानों को उजागर करने का काम किया।

संदर्भ :

[1] . "While love of a man for a boy was institutionalized in ancient Greece, the Arab culture makes no distinction between sex with a woman and sexual relations with a boy. Arab medieval travelers clain, 'women were for home and hearth, while boys were for pleasure'. These cultures offer no synonym for same-sex intercourse; it was not even a practice that needed separate identification". (The Fire that evoked warmth: Emergence of Lesbian Activism in Kolkata. 2003-2004. Sappho. Pg. 7)

[2] . Pattnaik, Devdutt (Edition: 2017). I am Divine so are you, India : Harper Collins, Pg.14

[3] . वेदव्यास, सम्पूर्ण महाभारत (हिंदी), गीताप्रेस, वनपर्व, पृष्ठ. 203 -206

[4] . वेदव्यास, सम्पूर्ण महाभारत (हिंदी), गीताप्रेस, विराटपर्व, पृष्ठ. 431-432

[5] . मिहिर, वराह (संवत् :1966). वृहत जातक, पंडित महीधर शर्मा (भाषा टीकाकार), मुंबई : श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस, पृष्ठ.36

[6] . मिश्र, अविनाश (संपा.) (2021). सदानीरा, विश्व कविता और अन्य कलाओं की पत्रिका, पृष्ठ. 9-10

[7] . एंगेल्स, फ्रेडरिक (संस्करण : 1884). परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति, पहला भारतीय संस्करण जुलाई 2010, पृष्ठ.77

[8] . द्विवेदी, हजारीप्रसाद (प्रथम संस्करण : 1948). अशोक के फूल, नई दिल्ली : सस्ता साहित्य मंडल

[9] . भुराड़िया, निर्मला (प्रथम संस्करण : 2016). गुलाम मंडी, नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन, पृष्ठ.67

[10] . जॉन, मैरी ई, तेजस्विनी निरंजना (प्रथम संस्करण 2008). प्रति-छवी की राजनीति: हिंदुत्व और भारतीय संस्कृति, मैरी ई.जॉन और जानकी नायर (संपा.) अभय कुमार दुबे (अनु.) नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृष्ठ. 211

[11] . एस, वी. (प्रथम संस्करण : 2008). 'फायर' की लेस्बियन आलोचना, मैरी ई.जॉन और जानकी नायर (संपा.) अभय कुमार दुबे (अनु.) नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृष्ठ.215

[12] . दिपा मेहता (निर्देशक) (1996). फायर (फिल्म)

[13] . दिपा मेहता (निर्देशक) (1996). फायर (फिल्म)

[14] . एस, वी. (प्रथम संस्करण : 2008). 'फायर' की लेस्बियन आलोचना, मैरी ई.जॉन और जानकी नायर (संपा.) अभय कुमार दुबे (अनु.) नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृष्ठ. 215-216

[15] . कल्पना लाजमी (निर्देशक) (1997). दरमियान: इन बिटवीन (फिल्म)

[16] . महेश भट्ट (निर्देशक) (1997). तमन्ना (फिल्म)

[17] . महेश भट्ट (निर्देशक) (1997). तमन्ना (फिल्म)

[18] . महेश भट्ट (निर्देशक) (1997). तमन्ना (फिल्म)

[19] . महेश भट्ट (निर्देशक) (1997). तमन्ना (फिल्म)

[20] . योगेश भारद्वाज (निर्देशक) (2005). शबनम मौसी (फिल्म)

[21] . 'स्त्रीनुमा व्यवहार' करने वाला 'गे'।

[22] . https://www.logintohealth.com/blog/brain-diseases/cerebral_palsy_in_hindi/

[23] . शकुन बत्रा (निर्देशक) (2016). कपूर एंड संस (फिल्म)

[24] . https://www.ndtv.com/india-news/gay-amu-professor-found-dead-suicide-suspected-414740

[25] . हंसल मेहता (निर्देशक) (2016). अलीगढ़ (फिल्म)

[26] . तनुज भ्रमर (निर्देशक) (2016). डिअर डैड (फिल्म)

[27] . तनुज भ्रमर (निर्देशक) (2016). डिअर डैड (फिल्म)

[28] . शेली चोपड़ा धर (निर्देशक) (2019). एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा (फिल्म)

[29] . शेली चोपड़ा धर (निर्देशक) (2019). एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा (फिल्म)

[30] . शेली चोपड़ा धर (निर्देशक) (2019). एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा (फिल्म)

[31] . शेली चोपड़ा धर (निर्देशक) (2019). एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा (फिल्म)

[32] . तथागता घोष (निर्देशक) (2019). मिस मैन (लघु फिल्म)

[33] . तथागता घोष (निर्देशक) (2019). मिस मैन (लघु फिल्म)

[34] . तथागता घोष (निर्देशक) (2019). मिस मैन (लघु फिल्म)

[35] . हितेश केवल्य (निर्देशक) (2020). शुभ मंगल ज्यादा सावधान (फिल्म)

[36] . हितेश केवल्य (निर्देशक) (2020). शुभ मंगल ज्यादा सावधान (फिल्म)

[37] . हितेश केवल्य (निर्देशक) (2020). शुभ मंगल ज्यादा सावधान (फिल्म)

[38] . हितेश केवल्य (निर्देशक) (2020). शुभ मंगल ज्यादा सावधान (फिल्म)

[39] . हितेश केवल्य (निर्देशक) (2020). शुभ मंगल ज्यादा सावधान (फिल्म)

[40] . हितेश केवल्य (निर्देशक) (2020). शुभ मंगल ज्यादा सावधान (फिल्म)

[41] . GLAAD (Gay and Lesbian Alliance Against Defamation) अमेरिकी LGBT गैर-सरकारी संगठन है

[42] . Bakshi, Kaustav, Rohit k. Dasgupta (Edition: 2019). Queer Studies, Orient Blackswan, pg. 115